रज्जु *m.* funis. N. 4. 4. *Etiam fem.* Man. 8. 299. (Cf. lat. *ligare*; v. रज्ज्.)

रञ्ज् 1. et 4. *P. A.* रञ्जामि, रञ्जे, रज्यामि, रज्ये (gr. 331b).) 1) tingere, colorare. रक्त ruber. H. 2. 3. 2) adhaerere, deditum, addictum esse (fortasse primitive ligare, cl. 4. *A.* vel *Pass.* ligari, cf. रज्जु funis et v. युज् *Pass.* sgf. 3.). *Caus.* tingere, collustrare. Mah. 1. 6772.: नृपस् तद् वनम् महत् तेजसा रञ्जयामास सन्ध्याभ्रम् इव भास्करः. 2) deditum sibi facere, sibi conciliare. Man. 7. 19.: सर्वा रञ्जयति प्रजाः (Schol. सानुरागाः करोति); Mah. 1. 4009.: पौरवान् शान्तनोः पुत्रः पितरश्च ... राष्ट्रञ्च रञ्जयामास वृत्तेन; 6264.: प्रजा रञ्जयते. (Cf. राज्, gr. ῥέζω, ῥηγεύς, ῥῆγος; cum रक्त ruber cf. hib. *rot*, gr. ῥόδον, ejectâ gutturali, mutatâ tenui in mediam sicut in ὄγδοος pro ὄκτοος; de germ. *rôt* v. रोहित, रुधिर.)

c. अनु 4. *P. A.* deditum, addictum esse. Bh. 11. 36.: जगत् प्रहृष्यत्य् अनुरज्यतेच. *C. loc.* Man. 3. 173.: भ्रातुर् मृतस्य भार्यायां यो ऽनुरज्येत कामतः. — अनुरक्त deditus. N. 22. 18.: उत्सृज्य ... अनुरक्ताम् प्रियाम्; R. Schl. I. 7. 2.: अनुरक्ताश्च राज्यकार्येषु. *C. acc.* R. Schl. II. 21. 16.: अनुरक्तो ऽस्मि भावेन भ्रातरम्. *C. instr.* R. Schl. II. 1. 10.: अनुरक्तः प्रजाभिः (v. praef. अभि). — *Caus.* deditum sibi facere, sibi conciliare. R. Schl. II. 1. 10.: प्रजाश्चै 'वा 'नुरञ्जयन्; Mah. 1. 3504.: अतिथीन् अन्नपानैश्च विशश्च परिपालनैः ... धर्मेण प्रजाः सर्वा यथावद् अनुरञ्जयन्.

c. अभि 4. *A.* deditum, addictum, studiosum esse, *c. instr.* R. Schl. II. 67. 13.: कथाभिर् अभिरज्यन्ते. — *Caus.* tingere, collustrare. R. Schl. I. 38. 21.: तेजोभिर् अभिरञ्जितम्.

c. उप उपरक्त obscuratus. R. Schl. I. 55. 9.: उपरक्त इवा ''दित्यः; II. 34. 3.: उपरक्तम् इवा ''दित्यम् भस्मच्छन्नम् इवा 'नलम्.

c. वि 4. *A.* averti, alienum, alienatum fieri. Mr. 45. 13.: चिरानुरक्तो ऽपि विरज्यते जनः; Hit. 24. 10.: यो विश्वसिति शत्रुषु भार्यासुच विरक्तासु; 27. 16.: मम कथाविरक्तो ऽन्यासक्तो भवान्.

c. सम् tingere, collustrare. H. 4. 46. *Pass.*: पुरा संरज्यते प्राची; Mah. 1. 6443.: सन्ध्या संरज्यते घोरा; 5. 273.: क्रोधसंरक्तनयनः.

c. सम् praef. अनु अनुसंरक्त deditus. R. Schl. I. 17. 16.: भर्तारम् अनुसंरक्ता.

1. **रट्** 1. *P.* vociferari, mugire, ululare. Bhatt. 14. 81.: पपात राक्षसो भूमौ रराटच भयङ्करम्; 14. 5.: सन्त्रस्ताः करभा रेटुः (Schol. करभा उष्ट्राः); 15. 27.: घोराश्चा 'राटिषुः शिवाः; Mr. 297. 11.: रटन्तः ... वायसाः. *V. sq. et* रठ्.

2. **रट्** 10. *P.* रटयामि (परिभाषणे) loqui. *V. sq.*

रठ् 1. *P.* (भाषणे) loqui. (V. 1. et 2. रट् et cf. germ. vet. *rediôn, redinôn*; sax. vet. *rethjôn, rethinôn* loqui; goth. *raz-da* sermo, loquela, ut mihi videtur, e *rath-da*, mutato *th* in sibilantem sonoram, propter sequens *d*, v. gr. comp. 102.)

1. **रण्** 1. *P.* 1) sonare, clamare, inclamare. *In dial. Vêd. cl.* 4. Rigv. 38. 2.: क्व वो गावो न रण्यन्ति «ubi vos, vaccae veluti, inclamant?»; 10. 5.: शक्रो यथा सुतेषु नो रारणत् «ut potens *ille* inter filios nostros resonet». (*Intens. in dial. Vêd.* रारण् pro रंरण् sicut रारम् a रम् q. v.). — रणित *n.* sonitus. Ur. 67. 7. *infr.* 2) gaudere (cf. रम्). Rigv. 91. 14.: यः सोम सख्ये तव रारणद् देव मर्त्यः «Lucide Soma! qui consortio tuo gaudet mortalis». (Cf. घ्रण्, भ्रण्, ध्वण्, hib. *ran* «a squeal, a roar», *ranach* «a squealing, roaring».)

2. **रण्** 1. *P.* ire. (Cf. goth. *RANN* currere, fluere; *rinna, rann, runnum*; nostrum *renne, rinne.*)

रण *m. n.* (r. रण् s. अ) bellum, pugna. N. 12. 83.

रण्व् 1. *P.* (व्रजे; scribitur रव्) ire. *Cf.* रण्, रिण्व्, रम्ब्, रिम्ब्.

रत v. रम्.

रति *f.* (r. रम् gaudere s. ति) voluptas. Br. I. 22. 2) uxor dei *Anangi*; *dicitur etiam* रती. N. 16. 12.